इकाई 9 अशुभ की समस्या

रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 परिचय

9.2 अशुभ की तार्किक समस्या

9.3 अशुभ की साक्ष्यात्मक समस्या

9.4 स्वतंत्र – इच्छा ईश्वरीय न्याय मण्डन (Theodicy)

9.5 आत्मा – निर्माण ईश्वरीय न्याय मण्डन

9.6 संभावित दुनिया में सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय न्याय मण्डन

9.7 सारांश

9.8 कुंजी शब्द

9.9 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम धर्म दर्शन और धर्मशास्त्र की महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक ''अशुभ की समस्या'' पर चर्चा करेंगे। वाद–विवाद के व्यापक क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए, समकालीन दार्शनिक और धर्मशास्त्री भी अशुभ की समस्या के इर्द–गिर्द होने वाली चर्चाओं पर बहस कर रहे हैं। अशुभ की समस्या, जैसा कि समकालीन दार्शनिक उस पर चर्चा करते हैं, एक ऐसे एकल–ईश्वर प्रत्यय को पूर्वधारण किए रहती है जो सर्व–कल्याणकारी, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। इस पूर्वधारणा ने अशुभ की समस्या को उसकी मूल संरचना प्रदान की जिस पर हम चर्चा करने जा रहे हैं।

* हिमांशु पर्चा, सहायक प्राध्यापक (दर्शनशास्त्र), युनाईटेड स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्सम एण्ड मास कम्युनिकेशन, कर्णावती विश्वविद्यालय।

अनुवाद– डॉ. प्रीति रानी, सहायक प्राध्यापक, दर्शन विभाग, हंसराज महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

इस इकाई के अंत तक विद्यार्थी निम्न बिन्दुओं को स्पष्ट रूप से समझने में सक्षम होंगे–

- अशुभ की तार्किक एवं साक्ष्यात्मक समस्या,
- ईश्वरीय न्याय मण्डन (थियोडिसी) की अवधारणा; स्वतंत्र इच्छा ईश्वरीय न्याय मण्डन, आत्मा निर्माण ईश्वरीय न्याय मण्डन, संभावित दुनिया में सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय न्याय मण्डन।

9.1 परिचय

दो साहित्यिक ग्रंथों – *जूड द ऑबस्क्योर* और *द ब्रदर्स करमाज़ोव* – में क्या समानता है? दोनों ग्रंथों के नायक – जूड और इवान क्रमशः ईश्वर के विचार को अस्वीकार करते हैं। उनका ईश्वर को अस्वीकार करना समाज में अशुभ/बुराई की उपस्थिति पर आधारित है। इवान के लिए बच्चों के दुःख अशुभ का ही मूर्त रूप है, उनका तर्क है कि यदि एक ईश्वर अवस्थित है, जो सामंजस्य और क्षमा का वचन देता है, तो बच्चों के दुःख को किस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है। बच्चों के दुःख के रूप में अशुभ की उपस्थिति के कारण, इवान ईश्वर के विचार को अस्वीकार कर देता है। जूड का ईश्वर को अस्वीकार करना इवान की तरह तार्किक युक्ति पर आधारित नहीं है, ईश्वर को अस्वीकार करने के उसके कारण अधिक व्यक्तिगत और अंतरंग हैं। अपने सामाजिक जीवन में कई असफलताओं के माध्यम से जूड ईश्वर के विचार से दूर हो जाता है, उसका तर्क है कि यदि ईश्वर का अस्तित्व होता तो मैं अपने जीवन में असफल नहीं होता। दोनों ग्रंथ अशुभ के विचार और ईश्वर की उपस्थिति के साथ इसके सम्बन्ध के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं।

यहाँ प्रश्न उठता हैः अशुभ की अवधारणा से हमारा क्या तात्पर्य है? हमारे दैनिक जीवन में, हम विभिन्न प्रकार की अशुभ/ बुराइयों का सामना करते हैं, कुछ की व्याख्या की जा सकती है, और कुछ की नहीं। एक सामान्य अर्थ में, कष्ट और दुःख का अशुभ से गहरा सम्बन्ध है। जो कुछ भी मानव जीवन में असुविधा लाता है, उसे आमतौर पर अशुभ की श्रेणी में रखा जाता है। लेकिन क्या इसे परिभाषित करने के लिए ये एकमात्र मानदंड हैं? क्या कोई अन्य मानदंड हैं जिन पर किसी को अशुभ /बुराई का वर्गीकरण करते समय विचार करने की आवश्यकता है? इस सम्बन्ध में, सर्व–गुण या सर्वोच्च सत्ता का अस्तित्व भी दायरे में आता है।

आम तौर पर, सभी एकेश्वरवादी धर्म मानते हैं कि एक दिव्य सत्ता है जो सर्व कल्याणकारी, सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है। इस दुनिया के अशुभों जिनका हम अपने दैनिक जीवन में सामना करते हैं, ऐसी सत्ता के अस्तित्व के लिए और इस तरह ऐसे सभी धर्मों के लिए एक चुनौती है। इसका अर्थ यह है कि इस तरह के एक दिव्य सत्ता में सभी प्रकार की बुराइयों/अशुभ को रोकने के लिए समस्त शक्ति, ज्ञान और नैतिक स्वभाव है, और ऐसे में अशुभ की उपस्थिति

एक ऐसी स्थिति पैदा करती है जो तार्किक रूप से संभव नहीं है। सर्व– कल्याणकारी, सर्वव्यापी और सर्वज्ञ और इस दुनिया में अशुभ की उपस्थिति की यह तार्किक असंगति *अशुभ की तार्किक समस्या* को जन्म देती है। इसके अलावा, इस दुनिया में अशुभ की उपस्थिति ऐसी संभावनाएं पैदा करती है जिनमें ऐसे दैवीय सत्ता का अस्तित्व असंभव है। ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण से, इस दुनिया में अशुभ ऐसे दैवीय अस्तित्व के विरुद्ध साक्ष्य प्रदान करती हैं, जब हम विशेष रूप से साक्ष्य भाग पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो इस समस्या के इस संस्करण को *अशुभ की साक्ष्यात्मक समस्या* के रूप में जाना जाता है।

दार्शनिकों और धर्मशास्त्रियों ने तर्क दिया है कि एक प्राणी जो सर्व– कल्याणकारी, सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है, अशुभ को अनुमति या स्वीकृति क्यों देगा। अशुभ को अनुमति देने के ईश्वर के कारणों को खोजने के इस अभ्यास को ईश्वरीय न्याय मण्डन (Theodicy) के रूप में जाना जाता है। धार्मिक और दार्शनिक साहित्य में ईश्वरीय न्याय मण्डन के विभिन्न संस्करण उपलब्ध हैं। इन सभी में सबसे प्रमुख स्वतंत्र इच्छा थियोडिसी है, जिसमें कहा गया है कि अशुभ ईश्वर के कारण नहीं हैं बल्कि वे मानव कर्ता के स्वतंत्र कार्यों के कारण हैं; आत्मा– निर्माण थियोडिसी में कहा गया है कि ईश्वर ने विभिन्न गुणों को विकसित करने के लिए अशुभ को स्वीकृति दी; एक दिलचस्प थियोडिसी लाइबनिज का दिया सिद्धांत है, इसे संभव दुनिया के थियोडिसी के रूप में जाना जाता है, जो प्रस्तावित करता है कि ईश्वर ने अशुभ की स्वीकृति दी होगी क्योंकि सभी संभव दुनिया में सर्वश्रेष्ठ दुनिया में अशुभ अवस्थित होगा और क्योंकि ईश्वर सर्व कल्याणकारी है और यह उसकी नैतिक प्रवृत्ति है कि वह सभी संभव दुनियाओं में से सर्वोत्तम प्रस्तुत करे। इससे पता चलता है कि अशुभ की समस्या एक बुनियादी सवाल पर आधारित है जिसे ये थियोडिसी उठा रहे हैं, यानी, क्या ईश्वर के पास अशुभ को न रोकने के कुछ कारण हैं।

बोध प्रश्न I

ध्यातव्यः क) उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर की जाँच करें।

1. अशुभ की समस्या क्या है?

.....

.....

.....

.....

9.2 अशुभ की तार्किक समस्या

अशुभ की तार्किक समस्या संभवतः प्राचीन यूनानी दार्शनिक एपिक्यूरस के कार्यों में अपनी उत्पत्ति पाती है। बहुत से लोग मानते हैं कि यह एपिक्यूरस था (जो, कुछ कहते हैं, एक नास्तिक था) जिसने तार्किक असंगति को उजागर कर ईश्वर के विचार को अस्वीकृत कर दिया था। डेविड ह्यूम ने भी अशुभ की तार्किक समस्या के निरूपण के लिए एपिक्यूरस को श्रेय दिया। ह्यूम के *डायलॉग्स कंसर्निंग नेचुरल रिलिजन* का चरित्र फिलो कहता है कि: एपिक्यूरस के पुराने प्रश्न अभी तक अनुत्तरित हैं।

''क्या ईश्वर अशुभ को रोकने के लिए तैयार है, लेकिन सक्षम नहीं है? फिर वह सर्वशक्तिमान नहीं है। क्या वह सक्षम है, लेकिन तैयार नहीं है? तब वह द्वेषपूर्ण है। वह सक्षम और इच्छुक दोनों है? फिर अशुभ कहाँ से आता है?'' (डेविड ह्यूम, *डायलॉग्स कंसर्निंग नेचुरल रिलिजन*, 1779, पृ.186)

ऊपर उद्धृत एपिक्यूरन कहावत, मूल रूप से, दो पहलुओं पर केंद्रित है 1) ईश्वर की क्षमता, और 2) ईश्वर की प्रवृति /इच्छा, जिसका अर्थ है कि ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और सर्वज्ञता ने उसे सभी प्रकार के अशुभ को रोकने के लिए सभी क्षमताएं प्रदान की,और उसकी अच्छाई दर्शाती है कि ईश्वर के पास हर प्रकार की अशुभ को रोकने की प्रवृत्ति/इच्छा है जिसे वह रोक सकता है। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ईश्वर और अशुभ के बीच एक तार्किक असंगतता है, जिसका अर्थ है कि यदि ईश्वर है तो कोई अशुभ नहीं होगा, और यदि अशुभ है तो ऐसा ईश्वर नहीं होगा जिसमें ऊपर वर्णित सभी गुण हों। एल्विन प्लांटिंगा का तर्क है कि ''अधिकांश समकालीन दार्शनिक जो मानते हैं कि अशुभ उन आस्तिक विश्वासों के लिए एक कठिनाई पैदा करती है जो तार्किक असंगति का पता लगाने का दावा करते हैं।'' (प्लांटिंगा, 1982, पृष्ठ 83)। इस तार्किक असंगति को आइए हम कुछ विधिवत् रूप से समझें:

क) एक दिव्य सत्ता जो सर्वहितकारी, सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान है।

ख) अशुभ अस्तित्वमान है।

हम इन दो कथनों को तार्किक रूप से असंगत के रूप में वर्णित कर सकते हैं, यदि हम उन्हें अन्य कथनों में जोड़कर विरोधाभास प्राप्त कर सकते हैं जो तार्किक रूप से आवश्यक कथन

हैं। (क) और (ख) के बीच तार्किक असंगति को निम्नलिखित दो कथनों के आधार पर देखा जा सकता है:

(पी1) एक सर्वकल्याणकारी प्राणी सभी अशुभ/ बुराइयों को रोकता है जिसे वह रोक सकता है।

(पी2) एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ प्राणी सभी अशुभ/ बुराइयों को रोक सकता है।

कथन (पी 1) और (पी 2) के मूल विश्लेषण से पता चलता है कि ये दोनों कथन अनिवार्य रूप से सत्य हैं क्योंकि इन कथनों की सच्चाई, कुछ अर्थों में, ''सर्वज्ञ'', ''सर्वशक्तिमान'', ''सर्वकल्याणकारी'', आदि जैसे शब्दों के अर्थ से जरूरी है। (पी1) में ''सर्वकल्याणकारी'' की उपस्थिति से पता चलता है कि ईश्वर के पास हर अशुभ/ बुराइयों को रोकने की इच्छा है, इसी तरह (पी2) में ''सर्वज्ञ'' और ''सर्वशक्तिमान'' की उपस्थिति से पता चलता है कि ईश्वर के पास सभी बुराइयों को रोकने के लिए पूर्ण ज्ञान और शक्ति है। इसलिए ये कथन अनिवार्य रूप से सत्य हैं। अब यदि इन आवश्यक कथनों को कथन (क) और (ख) के साथ मिलाएं, तो हम एक तरह के विरोधाभास पर पहुंच जाते हैं। (क), (पी1), और (पी2) के संयोजन का अर्थ है कि कोई अशुभ नहीं है, लेकिन इस दुनिया में अशुभ हैं, जिसका सीधा सा मतलब है कि उपरोक्त संयोजन का तार्किक निहितार्थ (ख) के विपरीत है।

ऐसा लगता है कि ईश्वर के अस्तित्व और अशुभ के अस्तित्व के बीच कथित तार्किक असंगति इस तथ्य पर आधारित है कि दोनों (पी1) और (पी 2) अनिवार्य रूप से सत्य हैं। इसलिए, अशुभ की तार्किक समस्या को हल करने के लिए, किसी को यह दिखाने की आवश्यकता है कि (पी1) और (पी2) में से कोई भी सत्य नहीं है। नेल्सन पाइक का तर्क है कि (पी1) अनिवार्य रूप से सत्य नहीं है क्योंकि ईश्वर की सर्वकल्याणकारीता से हम यह मतलब नहीं निकाल सकते कि वह हर उस अशुभ को रोकेगा जिसे वह रोक सकता है। उनका तर्क है कि अशुभ की तार्किक समस्या गलत तरीके से इस आधार वाक्य पर आधारित है कि ईश्वर हर उस अशुभ को रोकेगा जिसे वह रोक सकता है। वह अशुभ की तार्किक समस्या के मूल आधार वाक्य को कमजोर करके बुराई की समस्या को हल करने का प्रयास करता है। उन्होंने एक कमजोर आधार वाक्य को सामने रखा:

(पी 3) एक सर्व कल्याणकारी सत्ता हर उस अशुभ को रोकेगा जिसे वह रोक सकता है, जब तक कि उसके पास अशुभ को स्वीकृति देने के लिए पर्याप्त कारण ना हों।

एक आधारवाक्य के रूप में कथन (पी3) को पेश करना अशुभ की तार्किक समस्या को कमजोर करता है। क्योंकि यह दर्शाता है कि यदि ईश्वर के पास अशुभ को स्वीकृति देने का *पर्याप्त कारण* है, तो ईश्वर अशुभ की स्वीकृति दे देगा, और इसके निहितार्थ से इस दुनिया में

ईश्वर के अस्तित्व और अशुभ के बीच कोई तार्किक असंगति नहीं रहती है। तो ईश्वर के अस्तित्व और इस दुनिया में अशुभ के बीच तार्किक असंगति अंततः इस तथ्य पर आधारित है कि क्या ईश्वर के पास कुछ अशुभ को अनुमति देने के लिए पर्याप्त कारण हैं। यदि ईश्वर के पास कुछ अशुभ या बुराइयों को न रोकने का पर्याप्त कारण हैं, तो बुराई की तार्किक समस्या खत्म हो जाती है।

क्या वास्तव में ईश्वर के पास अशुभ को न रोकने के लिए कुछ पर्याप्त कारण हैं? इस प्रश्न का उत्तर अगले भाग में खोजा जाएगा।

9.3 अशुभ की साक्ष्यात्मक समस्या

पिछले खंड में, हमने देखा है कि अशुभ की तार्किक समस्या एक बहुत ही तार्किक मजबूत सम्बन्ध पर आधारित थी, सम्बन्ध इतना मजबूत है कि केवल एक कमजोर आधार वाक्य के सम्मिलित करने से जो ईश्वर के अशुभ को अस्वीकृत नहीं करने के पर्याप्त कारणों के बारे में बताता है, अशुभ की तार्किक समस्या की पूरी संरचना को ध्वस्त कर देता है। दार्शनिक जिनके पास इस बात का प्रबल तर्क है कि दुनिया में अशुभ ईश्वर के अस्तित्व के लिए एक चुनौती हैं, वे अशुभ की रचनात्मक और निर्णायक समस्या का तार्किक समाधान नहीं खोज पाएंगे।

ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास के लिए बुनियादी चुनौती इस बुनियादी तथ्य से नहीं आती है कि दुनिया में अशुभ मौजूद है, बल्कि चुनौती इस बात से आती है कि दुनिया में कितना और कितने गंभीर प्रकार के अशुभ मौजूद हैं। आस्तिक विश्वास के लिए चुनौती मर्लिन मैककॉर्ड एडम्स जिसे ''भीषण अशुभ'' कहता है से उपस्थित होती हैं:

> इस दुनिया को संक्रमित करने वाली अशुभों में से कुछ दूसरों की तुलना में बदतर हैं। मैं उनमें से सबसे घातक को भीषण अशुभ की श्रेणी में रखने की कोशिश करना चाहता हूं, जिसे मैं (वर्तमान उद्देश्यों के लिए) परिभाषित करता हूं, 'वह अशुभ जिनमें भागीदारी (अर्थात, जिनके कार्य या जिनके कष्ट) संदेह करने का प्रथम दृष्टया कारण हैं कि क्या प्रतिभागी का जीवन (इसमें उनके शामिल होने को देखते हुए) उसके लिए समग्र रूप से बहुत अच्छा हो सकता है'। प्रतिमान भयावहता के वर्ग में व्यक्तिगत और बड़े पैमाने पर सामूहिक पीड़ा दोनों शामिल हैं।
>
> उदाहरणों में एक महिला का बलात्कार और उसकी बाहों से कुल्हाड़ी मारना, मानसिक–शारीरिक यातना शामिल है जिसका अंतिम लक्ष्य व्यक्तित्व का विघटन है,अपनी गहरी वफादारी के साथ विश्वासघात, इवान करमाज़ोव द्वारा वर्णित बाल शोषण, बाल पोर्नोग्राफ़ी, माता–पिता का अनाचार, भूख से धीमी मौत, अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में परमाणु बमों का विस्फोट। (एडम्स, 1999, पृष्ठ 26)।

एडम्स ने जिन बुराइयों/ अशुभ को भीषण के रूप में चित्रित किया है, उनसे तार्किक दृष्टिकोण से निपटना कठिन है, और एक मात्र तार्किक थियोडिसी इस बात का उत्तर नहीं दे सकता है कि दुनिया में ऐसे अशुभ क्यों मौजूद हैं। इस तरह के अशुभ एक ऐसे व्यक्ति के अस्तित्व के विरुद्ध प्रबल *साक्ष्य* या कारण प्रस्तुत करते हैं जो सर्व हितकारी, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान हैं। यहां तक कि अगर हम कमजोर आधार वाक्य (पी 3) पर विचार करते हैं, तो ऐसे कोई पर्याप्त कारण नहीं हैं जो इस तरह की भीषण अशुभ के अस्तित्व को सही ठहरा सकें। इसलिए, किसी के लिए यह सोचना बेहद अनुचित है कि ऐसे अशुभ को रोकने के लिए ईश्वर के पास पर्याप्त कारण हो सकते हैं, जिसका कुछ मायनों में यह अर्थ है कि ईश्वर के पास भी पर्याप्त कारण होने की क्षमता का अभाव है।

इस संसार के भीषण अशुभ और ईश्वर के अस्तित्व के बीच के साक्ष्यात्मक सम्बन्ध से उत्पन्न समस्या ईश्वर के अस्तित्व और इस दुनिया में अशुभ के बीच तार्किक असंगति से उत्पन्न समस्या से कहीं अधिक गंभीर और समस्याग्रस्त है। इन दो समस्याओं के बीच के अंतर को समझने के लिए हमें सबसे पहले उस अंतर पर विचार करने की आवश्यकता है जिसे हम ईश्वर के अशुभ को न रोकने के लिए कारण मानते हैं, और अशुभ को न रोकने के *ईश्वर के वास्तविक कारण* क्या हैं । डेविड लुईस ने अपने 1993 के लेख ''इविल फॉर फ्रीडम सेक'' में इस अंतर को पर्याप्त रूप से उजागर किया है। वह ''बचाव / प्रतिपक्ष'' और ''थियोडिसी'' के बीच अंतर करता है, बचाव का मतलब है कि हम क्या सोचते हैं कि ईश्वर के अशुभ को नहीं रोकने के क्या कारण हैं, और थियोडिसी अशुभ को नहीं रोकने के लिए ईश्वर के वास्तविक कारणों को संदर्भित करता है। एक कमजोर आधारवाक्य को सम्मिलित करके अशुभ की तार्किक समस्या के समाधान को एक बचाव के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है, लेकिन वह बचाव अशुभ की साक्ष्यात्मक प्रत्यक्ष समस्या को हल करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

अशुभ की साक्ष्यात्मक समस्या को हल करने के लिए ऐसे अशुभ को नहीं रोकने के ईश्वर के वास्तविक कारणों को जानने की जरूरत है, लेकिन ईश्वर के वास्तविक कारणों को जानना नासमझी होगी, यहां लुईस ने एक बीच का रास्ता सुझाया। उनका तर्क है कि अशुभ को नहीं रोकने के ईश्वर के वास्तविक कारणों को समझने के लिए कमजोर तार्किक आधार वाक्य जैसी कुछ संभाव्य परिकल्पनाओं से शुरू किया जा सकता है और वहां से और अधिक जटिल परिकल्पनाओं तक आगे बढ़ाया जा सकता है। आगामी खंडों में, हम उन विभिन्न प्रयासों की चर्चा करेंगे जिनमें ईश्वर के अशुभ को न रोकने के कारणों को खोजने की कोशिश की गयी है।

बोध प्रश्न II

ध्यातव्यः क) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर की जाँच करें।

1. अशुभ की तार्किक समस्या क्या है?

.....

.....

.....

.....

2. बुराई की तार्किक और साक्ष्यात्मक समस्या के बीच के अंतर पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

9.4 स्वतंत्र – इच्छा ईश्वरीय न्याय मण्डन

ईश्वर के अशुभ को न रोकने के कारणों को समझने के शुरुआती प्रयासों में से एक सेंट ऑगस्टाइन द्वारा विकसित किया गया था। उनका तर्क है कि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया है और उन्हें उनके विकास और उत्कर्ष के लिए स्वतंत्र इच्छा प्रदान की है। लेकिन विकास के लिए इस स्वतंत्र इच्छा का सदउपयोग करने के बजाय मानव ने स्वतंत्र इच्छा का दुरुपयोग किया और पाप का मार्ग चुना। यह पाप इस दुनिया में हर तरह की बुराई का मूल है, जिसका अर्थ है कि वह ईश्वर नहीं है जो अशुभ के लिए जिम्मेदार है, बल्कि यह मनुष्य की स्वतंत्र क्रियाएं हैं जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न बुराइयां हुईं। ऑगस्टाइन ने स्पष्ट रूप से कहा कि अशुभ एक स्वतंत्र तात्विक श्रेणी के रूप में मौजूद नहीं है, बल्कि यह ''शुभ का अभाव'' है, जिसका अर्थ है कि अशुभ केवल शुभ के अभाव में होता है, और शुभ का यह अभाव केवल मानव कर्ता के मुक्त कार्यों के कारण होता है।

स्वतंत्र इच्छा और पूर्वनिर्धारण के बीच की बहस जटिल है। स्वतंत्र इच्छा थियोडिसी स्वतंत्र इच्छा के अस्तित्व के उदारवादी विचार के बारे में बात करती है जो किसी बाहरी शक्ति से बंधी नहीं है, यहां तक कि ईश्वर से भी नहीं। इस प्रकार, 'मनुष्य की स्वतंत्रता' का विचार प्राथमिक महत्व रखता है। इस प्रकार, मनुष्य द्वारा की गई कोई भी क्रिया किसी के बल का

प्रभाव से नहीं है, जो उसकी स्वतंत्र इच्छा के महत्व को उजागर करती है। इसे तीन–चरणीय सिद्धांत द्वारा प्रतिपादित किया जा सकता है– i) उदारवादी स्वतंत्र इच्छा का अत्यंत महत्वपूर्ण विचार; ii) कर्ता की स्वतंत्रता पर विचार करते हुए, ईश्वर भी व्यक्ति को बाध्य नहीं कर सकते कि वह वही करे जो वास्तव में सही है; iii) इस सम्बन्ध में, ईश्वर को एक ऐसी दुनिया बनानी चाहिए जहां कर्ता की इच्छा स्वतंत्र हो।

इसलिए यहां जो तर्क निहित है, वह यह है कि भले ही उदारवादी स्वतंत्र इच्छा आकर्षक हो, लेकिन उदारवादी स्वतंत्र इच्छा के संतोषजनक लेख अभी तक उपलब्ध नहीं हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह दावा करना कि क्रिया के कारण में कोई बाहरी शक्ति नहीं है, एक समस्यात्मक पहलू है। यह दावा करता है कि कर्ता ही हर किसी तरह के कार्य का कारण है। लेकिन कार्य–कारण की समझ यहाँ जटिल हो जाती है और कई प्रश्न उठाती है। इसके अलावा, स्वतंत्र इच्छा के विचार का पालन करने वाला बहुत ही अप्रतिबंधित पहलू हर तरह से समस्याग्रस्त है। किस बिंदु पर एक व्यक्ति किसी दूसरे को अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करने के लिए प्रतिबंधित करता है? क्या उदारवादी स्वतंत्र इच्छा के विचार को ध्यान में रखते हुए बिना किसी हस्तक्षेप के जघन्य अपराध होने देना चाहिए? एक ओर बात यह है कि सिर्फ इसलिए कि उदारवादी स्वतंत्र इच्छा एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है, क्या वह दूसरों के बीच शक्ति और क्रूरता का उपयोग करने की अनुमति देगा। इसके अलावा, कुछ बुराइयाँ प्राकृतिक क्रियाओं जैसे भूकंप, अभूतपूर्व आग, बाढ़ आदि के कारण होती हैं। यह किसी कर्ता या अनैतिक चरित्र के कारण नहीं होने से अशुभ के अस्तित्व पर पूरी बहस और अशुभ की समस्या के आसपास की बहस को गम्भीर कर देता है।

9.5 आत्मा – निर्माण ईश्वरीय न्याय मण्डन

जॉन हिक अपनी आत्मा–निर्माण ईश्वरीय न्याय मण्डन (थियोडिसी) में प्रस्तावित करते हैं कि अगर कोई ईश्वर को एक पर्यावरण के रूप में देखता है तो दुनिया की बुराइयों/ अशुभ को उचित ठहराया जा सकता है। यह पर्यावरण लोगों को अनुभव प्रदान करता है, जिसके माध्यम से लोग अपनी व्यक्तिगत पसंद का अभ्यास कर सकते हैं और आध्यात्मिक विकास कर सकते हैं। इससे उनका ईश्वर के साथ जुड़ाव होगा। इस प्रक्रिया में, हिक सुझाव देते हैं कि एक व्यक्ति आत्मा–निर्माण के चरण से गुजरता है। यहाँ विचार यह है कि ईश्वर ने दुनिया को सर्वाधिक शुभ के लिए बनाया है और इसलिए एक विशिष्ट उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यह उचित है। कहने का तात्पर्य यह है कि दुनिया की उत्तम संरचना की गई है और जब कोई अशुभ को एक समस्या के रूप में देखता है, तो वे दुनिया को एक सुखवादी स्वर्ग मान लेता है।

इस थियोडिसी के साथ समस्याएं कई गुना हैं। यदि ईश्वर वास्तव में इस दुनिया को डिजाइन करने में न्यायसंगत है, तो मानव जाति पर प्रलय, और यहां तक कि एक वैश्विक महामारी के व्यापक रूप से किए गए भयानक अत्याचारों के बारे में क्या कहेंगे? इसके अलावा, यह बहुत अनुचित लगता है कि दुनिया में ऐसे भयानक दृश्यों को केवल आध्यात्मिक विकास और बड़े होने के दौरान अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए होना चाहिए। इसके अलावा, हिक जानवरों के दर्द और बच्चों पर होने वाले अत्याचारों के लिए कोई औचित्य प्रदान नहीं करता है– चाहे वह बीमारी के माध्यम से हो या वयस्कों द्वारा दिये गये कष्टों के माध्यम से हो। इसके अलावा, अगर आत्मा–निर्माण वास्तव में जीवन का उद्देश्य है, तो पृथ्वी पर वर्तमान स्थिति के साथ, मानव जाति इसमें विफल हो रही है (कई लोग प्रलोभनों का जवाब देने, चुनौतियों का सामना करने और आध्यात्मिक विकास से गुजरने से पहले ही युवा अवस्था में मर रहे हैं)। दूसरी ओर, बहुत से लोग बिना किसी नैतिक बोझ के विलासिता का जीवन जीते हैं जो जीवन यात्रा में उनका साथ देता है।

9.6 संभावित दुनिया में सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय न्याय मण्डन

यह वह थियोडिसी है जिसे मध्ययुगीन दार्शनिक लाइबनिज द्वारा बुराई की समस्या के विपरीत प्रस्तुत किया गया था। इसके पीछे का विचार इस तथ्य पर आधारित है कि ईश्वर सर्वव्यापी, सर्व–कल्याणकारी और सर्वशक्तिमान है। इसलिए, ईश्वर ने उपस्थित जगत का निर्माण किया। इस सम्बन्ध में, ईश्वर एक बिल्कुल अलग दुनिया बना सकते थे या फिर किसी भी दुनिया को नहीं रचते, जिसका विस्तृत अर्थ है कि कई दुनिया हैं। क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान है, वह जानता था कि कौन सा संभव संसार सबसे शुभ होगा और इसलिए इसकी रचना हुई और चूंकि वह सर्व–हितैषी है, इसलिए उसने इसी दुनिया को बनाने का विकल्प चुना। इसलिए, इसका अर्थ है कि ईश्वर ने सर्वोत्तम संभव दुनिया बनाई। तर्क को आगे बढ़ाते हुए, लाइबनिज कहते हैं कि यदि एक और बेहतर दुनिया के अस्तित्व की संभावना होती, तो ईश्वर ने वर्तमान दुनिया को नहीं बनाया होता, जो कि सर्वोत्तम संभव दुनिया है। इस तर्क के विरोध में कोई हमेशा एक ऐसी दुनिया की कल्पना कर सकता है जिसमें वर्तमान से कम अशुभ है, लाइबनिज का तर्क है कि यह केवल एक व्यक्ति की कल्पना का उत्पाद है। इस प्रकार, उनका कहना है कि कोई भी दुनिया जिसमें वर्तमान दुनिया के अशुभ नहीं हैं, संभवतः बहुत अधिक मात्रा में अशुभ समाहित कर सकती हैं। इस प्रकार, कोई भी दावा कर सकता है कि ईश्वर ने अशुभ को बनाया है, जिसके लिए लाइबनिज का दावा है कि अशुभ सार रूप से पदार्थ नहीं है, बल्कि एक व्यक्ति को उसकी अच्छाई से दूर ले जाने का एक स्रोत है। इसके अत्यधिक आशावादी दृष्टिकोण के लिए आलोचना करते हुए, वोल्टेयर ने लाइबनिज के विचार पर एक व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी की, जिसमें कहा गया था कि दुनिया में ऐसी कई अशुभ/बुराइयाँ हैं जो इस तरह के सकारात्मक दृष्टिकोण को छोड़ देती हैं। यहां तक कि

बर्ट्रेंड रसेल ने लाइबनिज के सिद्धांत को अस्वीकृत कर दिया और दावा किया कि नैतिक और भौतिक अशुभ की उत्पत्ति एक तात्विक अशुभ से होती है। जिससे अर्थ यह है कि अशुभ अपने मूल में एक पदार्थ है और लाइबनिज के अनुसार सभी पदार्थ अच्छे हैं, इसलिए अशुभ भी अच्छे हैं ।

बोध प्रश्न III

ध्यातव्यः क) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर की जाँच करें

1. स्वतंत्र इच्छा थियोडिसी और आत्मा निर्माण थियोडिसी के बीच क्या सम्बन्ध हैं?

.....

.....

.....

.....

9.7 सारांश

इस इकाई में, हमने अशुभ की समस्या और उसके विभिन्न रूपों पर चर्चा की है। अशुभ की तार्किक समस्या बताती है कि ईश्वर के अस्तित्व और इस दुनिया के अशुभों के बीच एक तार्किक असंगति है। हमने देखा है कि अशुभ की तार्किक समस्या को केवल एक तार्किक थियोडिसी विकसित करके हल किया जा सकता है जिसे हम ईश्वर और इस दुनिया की बुराइयों के बीच सम्बन्ध दिखाने के लिए कमजोर आधार वाक्य को पेश करके विकसित कर सकते हैं। हमने चर्चा की कि अशुभ की साक्ष्यात्मक समस्या अशुभ की तार्किक समस्या की तुलना में बहुत कठोर है क्योंकि यह ईश्वर और इस दुनिया की बुराइयों के बीच के साक्ष्यात्मक संबंधों पर आधारित है, और कोई भी थियोडिसी संभवतः इस समस्या का समाधान नहीं कर सकती है। अशुभ की समस्या के इन दो प्राथमिक सूत्रों पर चर्चा करने के बाद, हमने ईश्वर के अशुभ को ना रोकने के लिए कारणों का पता लगाने के विभिन्न प्रयासों पर चर्चा की।

9.8 कुंजी शब्द

सर्वज्ञ : जिसे सब बातों का ज्ञान हो।

सर्वशक्तिमान : वह जिसमे हर क्रिया को करने की शक्ति या क्षमता है जिसे वह करना चाहता है। या कहें जिसमें सभी शक्तियां निहित हों।

सर्व कल्याणकारी : वह जिसमें असीमित अच्छाई है।

थियोडिसी : ईश्वर के बुराइयों को न रोकने के कारण का पता लगाने के दार्शनिक या धार्मिक प्रयास।

9.9 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

- एडम्स, एम.एम.सी (1999). *होरंडस इविल्स ऐण्ड द गुडनेस ऑफ़ गॉड.* कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस।
- हिक, जे.एच. (1990). *फिलोसोफी ऑफ़ रिलीजन.* पेंटिंस हाल।
- ह्यूम, डी. (1779). *डायलॉग्स कंसर्निंग नेचुरल रिलिजन.*
- लुईस, डी. (1993). ''इविल फ़ॉर फ्रीडम सेक?'' *फिलॉसॉफिकल पेपर्स,* 22(3), 149–172.
- मिस्टर, सी.वी. (2009). *इन्ट्रोड्यूसिंग फिलोसोफी ऑफ़ रिलीजन.* यूनाइटेड किंगडमः रूटलेज.
- पाइक, एन. (1963). ''ह्यूम ऑन इविल.'' *द फिलॉसॉफिकल रिव्यू,* 72(2), 180–197
- प्लांटिंगा, ए. (1982). *द नेचर ऑफ़ नेसेसिटी.* यूनाइटेड किंगडमः क्लेरेंडन प्रेस.

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1. अशुभ की समस्या एक दार्शनिक समस्या है जो दुनिया में मौजूद अशुभ के साथ सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वहितकारी अस्तित्व के बीच सम्बन्ध को समझने का प्रयास करती है। आम तौर पर, सभी एकेश्वरवादी धर्म मानते हैं कि एक दिव्य सत्ता है जो सर्व –कल्याणकारी, सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है। इस दुनिया के अशुभों जिनका हम अपने दैनिक जीवन में सामना करते हैं, ऐसी सत्ता के अस्तित्व के लिए और इस तरह ऐसे सभी धर्मों के लिए एक चुनौती है। इसका अर्थ यह है कि इस तरह के एक दिव्य सत्ता में सभी प्रकार की बुराइयों/अशुभ को रोकने के लिए समस्त शक्ति, ज्ञान और नैतिक स्वभाव है, और ऐसे में अशुभ की उपस्थिति एक ऐसी स्थिति पैदा करती है जो तार्किक रूप से संभव नहीं है। सर्व– कल्याणकारी, सर्वव्यापी और सर्वज्ञ और इस दुनिया में अशुभ की उपस्थिति की यह तार्किक असंगति *अशुभ की तार्किक समस्या* को जन्म देती है। इसके अलावा, इस दुनिया में अशुभ की उपस्थिति ऐसी

संभावनाएं पैदा करती है जिनमें ऐसे दैवीय सत्ता का अस्तित्व असंभव है। ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण से, इस दुनिया में अशुभ की उपस्थिति ऐसे दैवीय अस्तित्व के विरुद्ध साक्ष्य प्रदान करती हैं, जब हम विशेष रूप से साक्ष्य भाग पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो इस समस्या के इस संस्करण को *अशुभ की साक्ष्यात्मक समस्या* के रूप में जाना जाता है।

बोध प्रश्न II

1. अशुभ की तार्किक समस्या संभवतः प्राचीन यूनानी दार्शनिक एपिक्यूरस के कार्यों में अपनी उत्पत्ति पाती है। बहुत से लोग मानते हैं कि यह एपिक्यूरस था (जो, कुछ कहते हैं, एक नास्तिक था) जिसने तार्किक असंगति को उजागर कर ईश्वर के विचार को अस्वीकृत कर दिया था। ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और सर्वज्ञता ने उसे सभी प्रकार के अशुभ को रोकने के लिए सभी क्षमताएं प्रदान की, और उसकी अच्छाई दर्शाती है कि परमेश्वर के पास हर प्रकार की अशुभ को रोकने की प्रवृति/इच्छा है जिसे वह रोक सकता है। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ईश्वर और अशुभ के बीच एक तार्किक असंगतता है, जिसका अर्थ है कि यदि ईश्वर है तो कोई अशुभ नहीं होगा, और यदि अशुभ है तो ऐसा ईश्वर नहीं होगा जिसमें ऊपर वर्णित सभी गुण हों।

2. अशुभ की तार्किक समस्या एक बहुत ही तार्किक मजबूत सम्बन्ध पर आधारित थी, सम्बन्ध इतना मजबूत है कि केवल एक कमजोर आधार वाक्य के सम्मिलित करने से जो ईश्वर के अशुभ को अस्वीकृत नहीं करने के पर्याप्त कारणों के बारे में बताता है, अशुभ की तार्किक समस्या की पूरी संरचना को ध्वस्त कर देता है। दार्शनिक जिनके पास इस बात का प्रबल तर्क है कि दुनिया में अशुभ ईश्वर के अस्तित्व के लिए एक चुनौती हैं, वे अशुभ की रचनात्मक और निर्णायक समस्या का तार्किक समाधान नहीं खोज पाएंगे। ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास के लिए बुनियादी चुनौती इस बुनियादी तथ्य से नहीं आती है कि दुनिया में अशुभ मौजूद है, बल्कि चुनौती इस बात से आती है कि दुनिया में कितना और कितने गंभीर प्रकार के अशुभ मौजूद हैं। आस्तिक विश्वास के लिए चुनौती मर्लिन मैककॉर्ड एडम्स जिसे ''भीषण अशुभ'' कहते हैं से उपस्थित होती हैं, एडम्स ने जिन बुराइयों/ अशुभ को भीषण के रूप में चित्रित किया है, उनसे तार्किक दृष्टिकोण से निपटना कठिन है, और एक मात्र तार्किक थियोडिसी इस बात का उत्तर नहीं दे सकता है कि दुनिया में ऐसे अशुभ क्यों मौजूद हैं। इस तरह के अशुभ एक ऐसे व्यक्ति के अस्तित्व के विरुद्ध प्रबल साक्ष्य या कारण प्रस्तुत करते हैं जो सर्व हितकारी, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। यहां तक कि अगर हम कमजोर आधार वाक्य पर विचार करते हैं, तो ऐसे कोई पर्याप्त कारण नहीं हैं जो इस तरह की भीषण अशुभ के अस्तित्व को सही ठहरा सकें। इसलिए, किसी के लिए यह सोचना बेहद अनुचित है कि ऐसे अशुभ को रोकने के लिए ईश्वर के पास पर्याप्त कारण हो सकते हैं, जिसका कुछ मायनों में यह अर्थ है कि ईश्वर के पास भी पर्याप्त कारण होने की क्षमता का अभाव है।

बोध प्रश्न III

1. स्वतंत्र इच्छा और आत्मा निर्माण थिओडिसी एक दूसरे से रोचक ढंग से संबंधित हैं। मानव स्वतंत्र इच्छा मानव आत्मा या आत्मा निर्माण के विकास की दिशा में पहला कदम है। सेंट ऑगस्टाइन का तर्क है कि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया है और उन्हें उनके विकास और उत्कर्ष के लिए स्वतंत्र इच्छा प्रदान की है। लेकिन विकास के लिए इस स्वतंत्र इच्छा का उपयोग करने के बजाय मानव ने स्वतंत्र इच्छा का दुरुपयोग किया और पाप का मार्ग चुना। यह पाप इस दुनिया में हर तरह की अशुभ का मूल है, जिसका अर्थ है कि यह ईश्वर नहीं है जो अशुभ के लिए जिम्मेदार है, बल्कि यह मनुष्य की स्वतंत्र क्रियाएं हैं जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न बुराइयां हुईं। ऑगस्टाइन ने स्पष्ट रूप से कहा कि अशुभ एक स्वतंत्र तात्विक श्रेणी के रूप में मौजूद नहीं है, बल्कि यह ''शुभ का अभाव'' है, जिसका अर्थ है कि अशुभ केवल शुभ के अभाव में होता है, और शुभ का यह अभाव केवल मानव कर्ता के मुक्त कार्यों के कारण होता है। आत्मा–निर्माण ईश्वरीय न्याय मण्डन (थियोडिसी) प्रस्तावित करता है कि अगर कोई ईश्वर को एक पर्यावरण के रूप में देखता है तो दुनिया की बुराइयों/ अशुभ को उचित ठहराया जा सकता है। यह पर्यावरण लोगों को अनुभव प्रदान करता है, जिसके माध्यम से लोग अपनी व्यक्तिगत पसंद का अभ्यास कर सकते हैं और आध्यात्मिक विकास कर सकते हैं। इससे उनका ईश्वर के साथ जुड़ाव होगा। इस प्रक्रिया में, हिक सुझाव देते हैं कि एक व्यक्ति आत्मा–निर्माण के चरण से गुजरता है। यहाँ विचार यह है कि ईश्वर ने दुनिया को सर्वाधिक शुभ के लिए बनाया है और इसलिए एक विशिष्ट उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यह उचित है। कहने का तात्पर्य यह है कि दुनिया की उत्तम संरचना की गई है और जब कोई अशुभ को एक समस्या के रूप में देखता है, तो वे दुनिया को एक सुखवादी स्वर्ग मान लेते हैं। इससे पता चलता है कि दोनों सिद्धांत एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, और स्वतंत्र इच्छा से आत्मा निर्माण संभव नहीं है, और स्वतंत्र इच्छा है क्योंकि आत्मा निर्माण की प्रक्रिया अभी भी चल रही है।